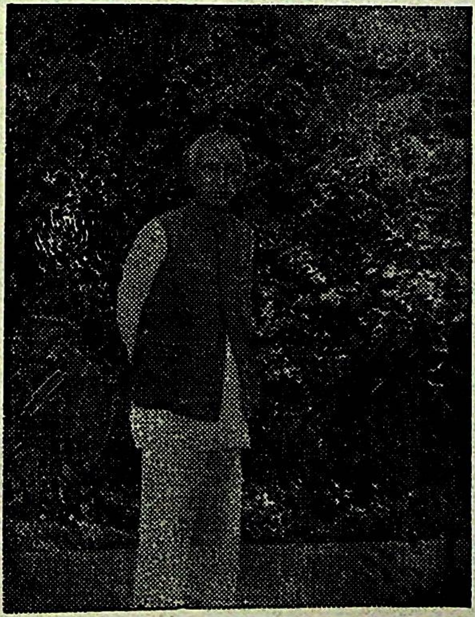
व्यनपोश



जगन्नाथ कालू "कल्प"

व्यन पोश

संपादक :

जगन्नाथ कालू (कल्प)

903, सुभाष नगर

जम्मू तवी।

द्वितियावृत्ति ... ...

मूल्य १०-००

जेष्टाष्टमी १९९१

लेखक परिचय

मुझे कई वर्षों से आदरणीय श्री जगन्नाथ जी कालू (कल्प) का परिचय है। कल्प जी बीस वर्ष की आयु से ही सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे हैं। इनमें कई वर्षों तक आल स्टेट काश्मीरी पंडित युवक सभा महावीरदल, हिन्दी प्रचारणीय सभा, हिन्दी संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन, हिन्दू यूथलीग ब्राह्मण-महामंडल काश्मीर आदि संस्थाओं में भिन्न-भिन्न पदों पर काम करते रहे।

कल्प जी समय-समय पर सामाजिक कार्य-क्रमों को पूरा करने के लिए कई कष्टों का सामना करना पड़ा। कल्प जी लिखने तथा बोलने के काम में निर्भयता तथा सत्य का सहारा लेते हैं। यहां तक इन्होंने सरकारी नौकरी न करके W.W.T. के विध्यालयों में चालीस वर्ष तक अध्यापक का काम किया। इस काम को ही सामाजिक उत्थान का एक आवश्यक कर्म समजा। अपनी मधुर तथा निर्भय वाणी पर सर्वधर्म मूल सिद्धांतों का अर्थात् मानवधर्म पर पूर्ण इनका विश्वास है। कल्प जी साप्ताहिक हिन्दी पत्र महावीर में बिना वेतन कई वर्ष काम करते रहे तथा हिन्दी मिलाप आदि पत्रों में अपने लेख देते रहे।

कल्प जी ने हिन्दी, काश्मीरी तथा संस्कृत में भक्ति, सामाजिक और कई धार्मिक रचनाओं की रचना की है जो क्रमशः प्रेमियों के पास आने वाली है। हम इस "व्यन पोश" संग्रह में उन प्रेमियों को कल्प जी के भूतकाल का कुछ परिचय देकर भविष्य के लिए प्रेरित करते हैं।

P. N. Bakshi
79, Karan Nagar,
Srinagar (Kashmir)

यः प्रभु जगत्सर्व सूर्यं रूपेन वर्धति।
तं वन्दे परं भर्गं चतुर्वर्ग फल प्रदम् (कल्प)

"जो प्रभु सारे जगत को सूर्य रूपसे पूर्णता प्रधान करता है। मैं उसी भर्ग रूप को प्रणाम करता हूं जो चतुर्वर्ग फल (धर्म अर्थ और काम मोक्ष) को देने वाला है।

भक्ति कर्म और देश तथा अपनी जाति हित के लिये सदैव प्रयत्नशील श्री जगन्नाथ कालू "कल्प" को सतत मेरा आर्शीवाद। कल्प जी के भावों से भक्तजन लाभान्वित हो "व्यन पोश" संग्रह प्रभु प्रेमियों के लिए एक भावना पूर्ण विचार प्रवाह है।

जियालाल कौल जलाली
कर्ण नगर, श्रीनगर (काश्मीर)
१-१०-८४

(१)

अमृत वाणी

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शन्तिश्चिरं ग्रहनी
सत्यं सूनुरयं दया च भगिनि भ्रातः मनः संयमम्।
शैया भूमि तलं दिशेपि बसनं ज्ञानाऽमृतं भोजनम्
एते यस्य कुटुम्बिनी वद सखे कस्मात् भयंयोगिनः॥

(अर्थ) —अज्ञात

धीरज जिसका पिता हो, क्षमा माता हो, चिर शान्ति पत्नी हो, सत्य बहू हो, दया बहिन हो, मन का संयम भाई हो, सेज धरती हो, दिशायें वस्त्र हो, जिसके इतने कुटुम्वी जन हों, कहो तो भाई ऐसा योगी किस से डरेगा।

त्रिभुवन विभव हेतवेऽप्यकुण्ठ स्मृति रजितात्मसुरा दिमिविमृग्यात्।
न चल्ति भगवत्पदार बिन्दालल्व निमिषार्धमपियः सर्वेष्णाग्यः॥

(अर्थ)

बड़े - बड़े देवता ऋषि मुनि भी अपने अन्तः करणों को भगवन्मय् बन ते हुये जिन्हें ढूंढ़ते रहते हैं भगवान के ऐसे चरण कमलों से आधेपल आधेक्षण के लिए भी जो नहीं हटता निरन्तर उन चरणों की सन्निधि और सेवा में संलग्न रहता है, यहां तक कि कोई उस से स्वयं त्रिभुवन की राज लक्ष्मी दे। तो भी वह भगवत्स्मृति का तार नहीं तोडता उस राज लक्ष्मी की ओर ध्यान ही नहीं देता, वही पुरुष वास्तव में भगवदभक्त बैष्णवों में अग्रण्य सब से श्रेष्ठ हैं।

(२)

प्रभात वन्दना

प्रातर्नमामि गणपति सिद्ध सोम्य मूर्तिम्।
सच्चित्सुखं अभयकरं गिरिजे प्रभूतम्॥

प्रातर्नमामि कलमशहरं कमलाक्ष नाथमू।
निकाम शाम सुन्दरं भव सिन्दु तारकमू॥

प्रातर्नमाम्यहं अजरं सुरेशं भस्मांग राग तननूपधारिणमू।
अनन्त रूप अभयंद महेशं ईशानं अजं अमरं सुरेशम॥

प्रातर्नमामि गिरि जाँ बहु रूप धारिणीम।
महिषासुर मर्दिनी जगतां षाप हरिणीम॥

भक्तानुगृह कारिणी सिद्धपीठ भासिनीमू।
श्री शारिका शारदां अनन्त रूप बैष्णवीम॥

जगते विमूषितं सूर्यं सर्वं दुःख हरंपरमू।
तोजसः वर्धयन् लोकान् मम पापंविपो हत्तु॥

षष्मुखो शिव सूनू मयूरः यस्य वाहनः।
प्रसन्नो भवत्तु नित्यं यो देबानभय वर्धकः॥

"कल्प"

(३)

"वनान कुस्तान्य यि गयिचेनवञ"

बोजान आस मीटय जीटय साज राज वुछुम राजस पानस निश।
निश रूजिथ सोज बोजान पानय सोरय सुयतय बियनो केह॥ सोरय

जय जय क्यन शब्दन मंज म्योनति शब्दा मीलितन्।
माज्य कूति भाव पोश छावान् अखछुत पोशम्योन ति छावितन॥
सोरय

करान टाट्य दय ज्ञानिथ यस पूजा ब अन्जान्य कर कया।
वाह वाह मिलनावनुक छुम हावस थवस कन युथबोज नाद॥ सोरय

वायान सारी म्यूठ-म्यूठ साज करान कुनिस प्यठ् छि नाज्ञ।
सोचान आकल यि क्या राज वनान कुनीछि आबज॥ सोरय

यी गव राज यी गव राज यलि जिव गिवान तमिसुन्द नाव।
चाव ह्वान म्यानि जिवि ति लोलो होल 'कल्पस' मंज जिगरस
दिगरस हुशार गव लोलो॥ सोरय

(४)

"भगवान् कहते हैं" सचा भक्त कौन है।

अद्वेष्डा सर्वं भूतानां मैत्रकरुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः सम दुःख हुखः क्षमी ॥ गीता १२/१३

प्रेम करान सारिनय जीवन् व्ययिमित्रन दयावान्।
ममतायत अहंकार रुस सुखस त दुःखस मंज हिहूय दयावान् वुछान ॥

(अर्थ)

समस्त भूत प्राणियों द्वेष भाष से रहित हो सब के साथ मित्रता का व्यवहार करे, मन में दया भरी हो, कहीं ममता न हो, किसी बात का अहंकार नहीं, अपने दुःख सुख में समभाव रहे तथा अपना बुरा करने वाले को भी अभय देकर उसका भला करे।

हर प्राणी के हृदय में बसा है एक मात्र भगवान।
यह सब विचार कर प्रभु प्रेमी सबों का सम्मान ॥

त्याग कर घृणा द्वेषको कर सबों से प्यार।
सार "कल्प" कह गये ऋषि मुनि और दिलदार ॥

(५)

श्री गणादि पतये नमः

जय गणेश दया सागर नागर नटवर दीनानाथ।
सिद्धयन् साधन हन्दि रक्षपाल गाल असिवन्य अभिशाप ॥

करत कृपा हरत दुःखन सुखन दित सतुक साथ।
जय जय गजमुख बालचन्द्र नागर नटवर दीनानाथ ॥
जय गणेश। ०

आदि देव कासुम खारी बपारी लगहथ चिय्।
अज्ञान कासुम बासुम हररूप छुक अनूप आनन्द कन्द।
जय गणेश। ०

उमकार रूप परंब्रह्मय स्वयभू सन्दि प्रिय नन्दनय।
जानान इम करान अर्चनय रक्षाकर जगतस क्षण क्षणय ॥
जय गणेश०

चय छुक् दीवन हुन्द आदिदेव त्रयलोकी हुन्द सारा सार।
म्यति तार करनावि चानि नाव तरय महिमा चौन अपरं पार ॥
जय गणेश०

हे "कल्पेश" कलि मल हारक मन मूषक म्योन वाहन चौन।
दोषक काम क्रोध लोभ मुह् मारक शाप दूर कर कास
संसार भ्रम ॥
जय गणेश०

विन्धध्वान्त निवारणैक तरणि विघ्नाटवी हव्य वाड्।
विघ्न व्याल कुलाभिमान गरुडोविघ्नेशपञ्चाननः ॥
विघ्नो तुङ्गगिरि प्रभेदन पविर्विघ्नाम्बुध वाडवो।
विघ्न धौघघन प्रचन्ड पवनो विघ्नेश्वरः पात्तुनः ॥

(अर्थ)

विघ्नरूप अन्धकार का नाश करने वाले एकमात्र सूर्य, विघ्नरूप बनके जलाने वाले अग्नि विघ्न रूप सर्प कुल का दर्प नष्ट करने के लिये गरुड विघ्नरूप हाथी को मारने वाले सिंह, विघ्नरूप ऊंचे पहाड़ के तोडने वाले वज्र, विघ्नरूप महासागर के वडवा नल विघ्न रूपी मेघ समूहके उड़ा देने वाले प्रचण्ठ वायु सदृश गणेश जी हम लोगों का पालन करें।

(६)

"गुरु भक्ति" लग पारि पारि गुरु चरणन

लग पारि पारि गुरु चरणन वर्णन करान देवताति आय।
श्री गुरन दयसुन्द दाय दित द्वय कासक मुक्तन सूत्य गय ॥ ल०

सच्चिदानन्द आनन्द कन्दसु स्वरुपय व्याप्तबिश्वरूपय छुक।
भास दिम सु प्रकाश गुफे छुपे यितम दितम ध्यान ॥ ल०

गुरु रूप भगवान ह्यावान् स्यजवथ्सत् क्या यमि संसारी।
सार जानिय मानिय रुच्कथ् तारतारान बडि अह्लादय ॥ ल०

हे गुरु परब्रह्मय संसार भ्रमय करुम दूर।
माया मूहनकुरुनस छिनय मत्योमुतछुम्अहंकार चूर ॥ ल०

अज्ञान अनिघटिमञ्ज छुस फुटमुत कोताह छुस परेशान।
जानदितम पननि जानिहज् ज्ञानियन युस जान आसान ॥ ल०

युस ज्ञान शूपि सूतिछटिथ त्रावान ह्यावान पजवथ सुविचार।
तमिस गुरु देवस छलह चरण पिमहस परन बार बार ॥ ल०

गुरुज्ञान जानकर मानापमान गवकया।
भुवि "कल्प" काल प्यठ् आम च कथ पत्वथ् ॥ ल०

गतकर श्री गुरुस खुरुस तल त्रावुस पान।
चली फेरून वानवान तीगवजान तीगवजान ॥ ल०

(७)

नमामि सत्गुरं शान्तं प्रत्यक्षं शिव रूपिनमू।
शिरसां योगपीठस्यं धर्मकामार्थं सिद्धये ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवेनमः ॥

गुरुब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुसाक्षात्महेश्वः।
गुरुदेव जगत्सर्वंतस्मै श्री गुरुवेनमः ॥

ध्यान मूलं गुरो मूर्तिः पूजा मूलं गुरुपदमू।
ज्ञान मूलं गुरुवाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा ॥

ज्ञानिना ज्ञानरुपाय प्रकाशाय प्रकाशिनांम।
विवेकना विवेकाय विर्मंशाय विमर्षिनाम् ॥

नमः शिवाय

आत्मा त्वं गिरिजा मति सहचरा प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजाते विवधोपभोगरचना निद्रा समाधिस्यितिः ॥

संञ्चारः पदयोः प्रदक्षिण विधि स्तोत्राणि संवा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभोतवाराधनम् ॥

(अर्थ)

हे शंभो! मेरी आत्माही तुम हो, बुद्धि श्री पार्वती जी है प्राण आपके गण है शरीर आपकी कुटिया है, नाना प्रकार की भोगी पसामग्री आपके पूजोप चार हैं, निद्रा ताधि है, मेरे चरणों का चलना प्रदक्षिणा और मैं जो कुछ भी करता हूं वह सब आपकी आराधना ही है।

ज्योतिर्मयं चन्द्र कलावतं सं कैलास श्रृङ्गेविमले बसन्तमू।
संपूज्यमानं सततं मुनीन्द्रै तं शकरं भक्त हितं नमामि।
"कल्प"

भाव पूजा

अष्टईश कष्ट कासुम चुवापारी लागहाय पोश चारि चारिये।
देह अभिमानय क्रोध अज्ञानय कमकम बहानय करान आस।
आशछम चानी गाश रस्तिस् दिम् अनवारी लागहिय पोश
चारि चारिये॥

छुख सदाशिव अजर अमर करकया चियरुस मन्द छोमुत।
म्यतिदित दर्शुन चलन पापनि बारी लागहय पोश चारि चारिये॥

चय बोड दाता चय म्योन विधाता मातापिता म्योनय चय।
भेदभाव कासतम बासतम चुवापारी लागहय पोश चारि चारिये॥
आशुतोष होश दिम भवसरस तरनुक नत वनत कर कया ब।

आमुत छुस शरण हेत्रिशूल धारी लागहय पोश चारि चारिये ॥

भवरुप आसवनि भक्तन भासवत्र आसवनि आसीन केलसय ।
भयकास रुद्ररूप सुद्रस असिकुस्तारी लागहय पोश चरि चारिये ॥

शान्त रूप रोजतम मनिमेज खठितम वठिथय थवहथ अछिनय मंज ।
वन कया हिनिछय म्यानि खारो लागहय पोश चारि चारिये ॥

कनव बोजह चोनुय सोजाह रोजह हरदम लयसूत्य ।
रुनि छुत्र थवतम क्षणक्षण जारी लागहय पोश चारि चारिये ॥

"हे कल्पेश्वर" कल्पान्त कालय चालय कोता दुःख ।
सुख मुख थवतम हे कपाल धारी लागहय पोश चारि चारिये ॥

(६)

प्रभुशरण

आदनुन वाद चकर् याद लायय नाद कनव बोज ।
जिन्द रुजिथ छुम चानि सायि बेपरवायि दमा रोज ॥

वनान सारी चोनय राज गडिथ ताज फेरान छुक ।
अन्द रजिय छुक प्रथ् जाय बेपरवाय दमारोज ॥

कनन गोमुत बनानच्य चय सोरय व्ययनोकेह ।
अदवनतम् यिमकम् ग्रायि बेपरवाय दमारोज ॥

दम दम दम सूति दम हयथ आय गय कूति ।
मयचाव पननि माय बेपरवाय दमा रोज ॥

कर्मकरनाव यथ भूमिकाय धर्मरजि खारवत्र हयोर ।
स्यजरवुछुम पजिकपाय बेपरवाय दमारोज ॥

जिन्दगी गापि जिन्ददिली रिन्द यछि पकिखिन्द करान ।
आगरुकयस् मेलि तस् कयावाय बेपरवाय दप रोज ॥

चान्य छम बड मेहरबानी व बडकहानी वनकया ।
वन्नस्ति वरयन वाय बेपरवाय दमारोज ॥

शमहृदजान चानि प्राय मायकरान पापोर गत ।
मजगछान पननित्राय बेपरवायि दमारोज ।।

अच्छिन गोम गाश सूहितबुजरन होशन्यूनम लूरिथ ।
होर "कल्पन" दिसवज दाय बेपरवाय दमारोज ।।

क्षमाकरतम क्षमा शील बेवसीलय छुसयव ।
स़ोरय बनि चान्य दयायि बेपरवाय दमारोज ।।

(१०)

प्रभु की चाह

लोल दजस सुतसुतये पोश मुतये कुतयेगोम ।
दुध वालिज पेम शोलफुतिये वोश मुतये कुतये गोम ।।

यालि बुछोम होशिसान रोशि रोशे करनम नजर ।
सिजर ओसुम दूरेम लुतये पोश मुतये कुतये गोम ।।

छस मच गमच् यस्रुस कस वनत कुस बोजिम ।
सोजिमकर पनुन युतये पोश मुतये कुतये ।।

पोश मति म्यानि यावन चूरो दर्द वनके बडि नूरो ।
गूर करयो कन दूरो यूरि युतो लुतये पोश मुतये
कुतये गोम ।।

ब माछसत् गार गारान प्रारान प्रारान लूसस ब ।
बालि इतम दर्शुन दितम लागहय गुलाब फुत्तिये
पोश मुतये कुतये गोम ।।

चिकुन वुछि - २ अछि लज्यम दरस बरस कुनय
नजर छम ।
ब प्रारान दम रठिय महिम् पुतये पोश मुतये
कुतये गोम ।।

दिल म्योन पोश खुत आव्युल जाव्युल तीरमसलाय ।
अथ अन्दर ब्यह मठि खुतये पोशमुत्तये कुत्तये गोम ।।

पोश मुतम्योन आदन भोजय वाद करान करान द्राव ।
ग्राव करमस कुरनम क्रुतये पोश मुतये कुतये गोम ॥

वल जल जल मकर छलय कल चान्य छम गनेमच ।
चानि दूर रोजनुक छुम दिलस क्रुतये पोश मुतये कुतये गोम ॥

छुकना चय बोड जानिजानान मानान जहांन आव ।
नाव चोन म्यति लानि खुतये पोश मुतये कुतये गोम ॥

फेरान छुख इनिव तति मतिम्यानि कनव बोज ।
सोज वायान रोज इतिये पोश मुतये कुतये गोम ॥

आयस गामन त शहरण फीरित चवनतकुतय गीख ।
इत "कल्पस" छस सथये पोश मुतये कुतये गोम ॥

श्री राम

लोकाभि रान रण रंङ्ग धीरं
राजीव नेत्रं रघुबंश नाथम् ।

कारुण्य रूपं करुणा करतं ।
श्री राम चन्द्र शरणं प्रपद्ये ॥

"अर्थ" "जो संम्पूर्ण लोकों में सुन्दर रण क्रीडा में
धीर कमल नयन रघु वंश नायक
करुणा मूर्ति और करुशा के भण्डार हैं
जन राम चन्द्र जी की मैं शरणा लेता हूं"

श्री राम चटतम मव बन्धनय वन्दन यिमयचिय ।
दशरथ राजनि नन्दनय वन्दनय यिमयचिय ॥
वन कस पनुन दोद खुत मुत छुम पापुन लोद ।
चिय रुस कुस थविम कनय वन्दन यिमय चिय ।
कुश गय सारी चानि जिनय वनय बति कोताह
भक्तन भाव बरुथ क्षण क्षणय वन्दन यिमय चिय् ॥ श्रीराम ॥
करतम दया दया सागर गागर अख उत्थि समुद्रस्

पत व नो केह्ति वनय वंन्दन यिमय चिय ।। श्रीराम ।।

तारान तारस छुक तिमनयिम रुध्य प्रारान चिय
मिति दित तार इमी जन्मय वन्दन यिमय चिय ।।

शान्त रूप वुछ वुन रोज चानिस रूपसम्य कुरूप कास ग्रांगल
चुपारि बास्तम आनन्द कन्द य वन्दन यिमय चिय ।

संसार तापन शशान लोगुस पापव वलुम पान ।
मान छाडिथ ज्ञान छटुम क्या क्या वनय वन्दन यिमय चिय ।।

शम दम शान्ति हासिल करिथ दितम पनुन ध्यान
मान अपमान मशरावुम चटुम क्रोधुक फन्दय वन्दन यिमय चिय
कलातीत बिन्ढ रूपय सत्स्वरूप सोरय चिंय
भय कासुम सुय छुम जय वन्दन यिमय चिय ।।

कल्पन हृन्दि कल्पेश्वरय कल्पस कर कल्याण ।
वरदितम परमेश्वरय वन्दन यिमय चिय ।

श्री कृष्ण वंदे

सदैव पादपकजमू मदीय मान से निजमू ।
दधान मुत्तमालकं नमामि नन्द बालकमू ।
समस्त दोष शोषणं समस्त लोक पोषणं
समस्त गोप मानसं नमामि नन्द लालसमू ।

"अर्थ"

जिन्होंने अवने चरण कमलों को मेरे मन रूपी सरोवर में स्थापित कर रखा है उन सुन्दर अलकों वाले नन्द कुमार को नमस्कार समस्त दोषों को दूर करने वाले समस्त लोकों का पालन करने वाले समस्त ब्रज-गोपों के हृदय नन्द जी लाल सा रूप श्री कृस्ण चन्द्र को नमस्कार करता हूं ।।

नारायण स्यानि श्री गोपालो हा नन्द लालो वत्थू निन्दरे । नारा……
यशोदा माता छय दिवान नालो उत्थू गोपालो गाश हो आव ।

सूर्य प्रकाश प्यव प्यठ् पंचालो श्री गोपालो गाश हो आव। नारा ......

सारी शुरि उत्थि छनिथ पोश मालो साल हो-करान छिय चेय।
वनान दुध हो चमव प्यालत प्यालो श्री गोपालो गाशहो आव। नारा ...

अच्युत साने उथत मन माने चानी बापत आय अस्य सरी।
प्यार करहोय बोजत सवालो हा शाम लालो गाश हो आव। नारा...

गोपाल गोबिन्द हरि मुरारी मधुर आवाज़ गयि चुपारी।
बूज़िथ नन्द गूरि कोरनस् बुलाओ हा नन्द लालो उत्थू निदरे। नारा ...

वनान नन्द गूर नूर हस फुलिव पुलिव अन्धकार चल गव दूर।
शुद्ध शान्त कृष्ण गुन्दरस प्रारान वोत यच कालो श्री गोपालो गाश हाव। नारा ......

नन्द नन्दनय वन्दना करहोय धर होय अछिन मंज ध्यान।
ज्ञान नो जानव अस्यछि बेमिसालो यशोदा लालो उत्थूनिदरे। नारा...

हे कृष्ण वास्त म्य मारा न छालो नाल रटहथ बय।
अद "कल्पस" रछत कृपालो उत्थू रक्ष पालो योग निदरे॥

(११)

हे कृष्ण बोज़ म्यानि ज़ार

हे कृष्ण बोज म्यान्य जार यि कम्य मार करस ब।
पानय ब पानस फरस मि कम्य मार करस ब॥

नट वर च वछिहथ बार यि कम्य मार करस ब।
च छुकना दीन दयाल नाल रठहथ ब॥

नालि छनय मुक्त माल यिकम्य मार करस ब।
बोजत छुम कुनय सवाल गोपाल इतम वत्र॥

अद रोजय तिली वार यि कम्य मार करस ब।
वजिस मूहन ज्ञाजिनस, कामं क्रोधन करहम जाय॥

खुतुम यलि अहंकार तमी मार करस ब।

गोविन्द गोकुला नन्दय अच्युत अनन्द कन्द य ।
रछ तम संसार फन्दय यम्य मार करस ब ॥

माया तीत छाय मत रोज तम बनहृय कथा वीजतमू ।
वननस चिरुस कस छुम वार यि कम्य मार करस ब ॥

चय छुक रमा राम चय छुक परम दाम ।
निरेजन निराकार यि कम्य मार करस ब ॥

छु वनान "कल्प" कल्पान्त कालस संसार जालस मंज रछतम वञ ।
अदरोजय वार वार यि कम्य मार करस ब ।

(१२)

दर्शुन हाव

"चान्य बापत गोस दीवानय"

चान्य बापत गोस दीवान भगवानय दर्शुन हाव
रोज कोताह ब बेगम दम चाने छुस जिन्द हर दम ।
इमि दमय गछम असलचि जानय भगवानय दर्शुन हाव
ज्यूट सुदाह क्रूठ संसार चुवा पारि छु हा हा कार
वार थवत दयावानय भगवानय दर्शुन हाव ।
चानि वेरि घरि द्रायोस फीरि फीरि युत आयोस
मुत यावुन लूसम क्षण क्षणय भगवानय दर्शुन हाव
हे दयामय कास्तम भवभय जय चेय करान सारी
चेय वनान छि सारी कृपानिधानय भगवानय दर्शुन हाव
चरा चरस मंज छुक आसवुन भासउन छुक लय मंज
छय कास मिति वन्दहृय प्राणय भगवानय दर्शुन हाव
चकुनय बहुरूपय सत्य स्वरूप सत छम चाञ
मिति तार दिम दया वानय भगवानय दर्शुन हाव ॥
"कल्पेश्वर" कला धरय करबति चोनुय ध्यान ।
ज्ञान उप दावुम हर तम अज्ञानय भगवानय य दर्शुन हाव ।

(१३)

राम चन्द्र शाम सुन्दर

राम चन्द्र शाम सुन्दर दीन दयालय अज इत सालय सोन।
नालब रठहृथ खटहृथ मनि मंज कनि मंज यिथ पाटय लाल।
शिव रूप चावह्‌थ मसकी प्यालय अज इत सालय सोन।
राम ॥ ०

शिशि मुख शिशि धर हयू छुस रोठ गोमुत प्योमुत चिनिश दूर।
यूरि इतम कोताह् ब चालय अज इत सालय सोन। राम ॥ ०

योगकि योगी भोगकि भोगी म्य रोगी पानय प्योम।
आश छम चात्र वत्र प्रनत पालय अजइत सालय सोन।
राम ॥ ०

कोतह् वनय कनय बोज़तम रोज़तम हर मुख संन्निदान।
छ्रय कासिथ भासतम प्रथ कालय अजइत सालय सोन।
राम ॥ ०

छूख च सोरय चिय मंज सोरय होरय तिमव इमव दित चित।
सत्‌चिदानन्द हृदय म्योन चोन आलय अजइत सालय सोन।
राम ॥ ०

योगेश्वर योग गम्य नमान चिय सारी "कल्पा" न्त काल
कि हे माहा कालय अज इत सालय सोन।
राम चन्द्र शाम सुन्दर दीन दयालय अज इत सालय सोन॥

(१४)

वुथ सुलि जीवो

वुथ् सुलि जीवो निथ् प्रभात वेलय मेलय छु लगमुत ब्रह्मा सुन्द।
घट चलान गाश इवान जीव इमि वेलय मेलय छु लोगमुत ब्रह्मा सुन्द।
देवता ऋषि उथ जल जल मलने छलनेहितिक तन त तून्य।

दून्य जजि कोंचव केचन ॐ वेलय मेलय छु लोगमु ब्रह्मा सुन्द।
वुथ सुलि ॥ ०

सुदूरि मन्दिरस मंज आवाज मधुर छि वजान संतूर साज।
करान सारी कम कम खेल मेलय छु लोगमुत ब्रह्मा सुन्द।
वुथ सुलि ॥ ०

प्रभातकि वाव अछि मुचरावत जीव त्राव सोरय आलुच वुञ।
वय त्राविथ द्वन नो रोजी दय छुय सतुक वेलय मेलय छु लोगमुत
ब्रह्मा सुन्द। वुथ सुलि ॥ ०

प्रभात कालय पान गोपालय नेरान ओस मुरली वायान।
वलकहिथ ओस करान वन वन खेलय मेलय लोगमुत ब्रह्मा सुन्द।
वुथ सुलि ॥ ०

वनान सारी वनान सोरय धोरय ध्यान इमि प्रभातय।
मान त्रविथ जान पानय छु "कल्प" कल्पुक वेलय मेलय लोगमुत
ब्रह्मा सुन्द। वुथ सुलि ॥ ०

प्रभात कालय हिथ पोश मालय छाल मारान-पुष द्राय।
माय बरान लोलमति पूजकरान इमि वेलय मेलय छु लोगमुत
ब्रह्मा सुन्द। वुथ सुलि ॥ ०

(१५)

हरि ॐ तत्सत्

विवेको वैराग्यो नच शम द माध्याः षड परे
मु मक्षा मे नास्ति प्रभवति कथं ज्ञानम अमलमू।
अतः संसाराब्धे स्तरण सर्णि मामुप दिशनू
सुबुद्धि श्रोती मेवितर भगवस्त्वंहि कृपया॥

(अर्थ)

हे भगवान! मुजमें न विवेक है, न वैराग्य ओर न शम दम आदि ज्ञान के अन्य छः साधन नहीं है मुझे मुक्त होने की सुदृढ़ इच्छा भी नहीं है, फिर कैसे निर्मल ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इस लिये संसार

सागर को पार करने के लिये सन्मार्ग का उपदेश तुम कृपा कर मुझको अपनी वैदिक बुद्धि (ब्रह्मविधा) प्रदान करो।

ब्रह्मा छुसत् वच्छान आय पतवत् हरि ॐ तत्सत्-हरिॐ तत्सत्।
कयाजि जीव छुख गच्छान पत पत् मत त्राविथ जान च कुनिय
कथ हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।

आय कात्या ऋषि महर्षि तपी ज्ञानी त रूहानी मानी सारिक्य
आखर यी कथ हरि ॐ तत्सत्-हरि ॐ सत्सत्।

कास्त जीव पानस मंज द्वयी पजय जानुन छ सही
नही त्राविथ प्राविथ गुरुवथ हरि ॐ तत्सत्-हरि ॐ तत्सत्।

ध्रुवन प्रह्लादन् अल्हाद लबित् राम कृष्ण सोहं बनिथ
वनिक ग्यवक यहय पजकथ हरि ॐ तत्सत्-हरि ॐ तत्सत्।

मथव जिनुक धनुक अहंकार कालि गछान सारिसय संहार
यि वुच्छान आय दिन राथ विचारुन छुसत् हरि ॐ तत्सत्-
हरि ॐ तत्सत्।

परि पन्डित गय हरान प्रेमय जानुक प्रथशयि छु नारण
मारुक मन्मथ जानिक शबगत् हरि ॐ तत्सत्-हरि ॐ तत्सत्।

पुज गय वनान प्रेम पुजारी यारी यलि करनक पत्रि यारी
नेरि कया "कल्प" फेरि आलम रोजि सत् हरि ॐ तत्सत्-
हरि ॐ तत्सत्।

(१६)

दम दम शम शान्ति

दम दम शम शान्ति गम कासि नाराण प्राराण छुसस् हर मुखय।
छुक् अनन्तय विराट रूपय सत्स्वरूपय गुणातीत
हरि हर रूप छुक नावन् धाराण प्राराण छुसस् हर मुखय

हर रूप भास्तम चतुर्भुज धारी पारी लगहय चरणन चिय॥
पुन्य पापच जान छमन केह छुमन सारान प्रारान छुसय हर मुखय।

अमृत मन्थन कोर देववत् दानवव् मन्दि मन्दि खारिख रन्तकि कोश।
विषकुय पान कुरुन छाल मारान प्रारान छुसय हर मुखय।
वनान चिय छि उमा शंकर चय छुक पानय रमा-नाथ,
कुनय चय छुक मियन्नो केह् च्छु व्यापत नारान पानय प्रारान छुसय हर मुखय॥
नारायण म्यानि निरामये भय भव सद्रुक कासुम म्य।
राम रूप वछ हाथ वातुम यच काल प्रारण प्राराण छुसय हर मुखय।
मक्त वत्सल मुक्ति विधाता प्रातः स्मृणीय चय
चात्र संयोग योग छुय लारान प्राराण छुसय हर मुखय।
वन "कल्प" कल्पान्त कालस गाल अस्य वत्र भव संताप।
व्यापक विश्वरूप जगतस् धाराण प्राराण छुसय हर मुखय॥

(१७)

हर हर महादेव

ध्यायेन्तित्यं महेशं रजत गिरि निभंचारू चन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पो ज्ज्वलाङ्ग परशु मृगवरं भीति हस्तं प्रसन्नभू।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुममर गणैर्व्याघ्रकृत्ति वसानमू।
विश्वाद्यं विश्व बीज निखिल भय हरं पंच वक्तं त्रिनेत्रमू॥
(अर्थ)

चांदी के पर्वत समान जिनकी श्वेत कान्ति है जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं रत्नमय अलंकारों से जिनको शरीर उज्जवल है। जिनके हाथों में मृग वर और समय है जो प्रसन्म है पदम के आसन्न पर विराज मान है, देवता गण जिस के चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं। जो विश्व के आदि जगत की यत्पति के बीज और समस्त भयों को हरने वाले हैं जिन के पांच मुख और तीन नेत्र हैं उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

कुनय असिथ छु जाय जाये शिवाय नमः उम नमः शिवाय
युस जल रूपय मल कासान सुय अग्न रूपय प्रकाश भासान
युस वायु रूपय श्वास उश्वासय शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय
युस भूमि रूपय वनान विचित्रय युस सूर्यरूपय जीवन प्रदाय
युस होतृ रूपय करान क्रियायशिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।
युस कर्म रूपय सुकर्म कारक युस भक्ति रूपय दीवन दयाय।
युस शिव रूपय कल्याण कारी युस रुद्र रूपय संहार कारी
युस ब्रह्मा रूपय सृजन कारी जै जै करितव विष्णु मायायशिवाय
नमः ॐ नमः शिवाय।

उमकार रूप परं ब्रह्मय त्रिगुणातोत सत्स्वरूप
कलामय बिन्दु शब्द ब्रह्माय शिवाय नमः ॐ नयः शिवाय।
यज्ञ सरूपाय कर्मप्रदाय सत्कर्मधर्मे वरप्रदाय
माया सुरूपाय दिगम्बराय शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।
सन्ध्या स्वरूपाय जटा धारय पिनाक हस्ताय सनातनाय
अष्ठेश शंभो विश्वरूप कल्पेश्वर हे जनप्रियाय
शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय।

(१८)

शिव शंकर बोज़

शिव शंकर हर बोज़ फरियादय नादय लायान छुस।
चियरुस कुस छुम कुस दियम दादय नादय लायान छुस
युस यिवान चिय शरण तस् पानय छुक वसान
चरण चाञ् भक्तसुरान परान चोनय संवादय नादय लायान छुस।
दिगम्बर परमेश्वर कर कया हिन आस छिन गछ्थिय
दिततार म्यति इति कया लारुन नाव चोन तार तारान छुम
हर हर करान हरतम थर थर मर मर गोमुत छुमा।
शुमरुन मनगछि इच्छि पच्छि गच्छि रोजन यी छु पुजवादय नादय
लायान छुस।
प्रोन याद पाविथ नुव मशराविथ सिद्ध सादय नादय
लायान छुस।

शिव शंकर हर बोज फरियादय।
चरा चरकि हे रक्षापालय गाल पाप करम्य द्वय दूर
बय बय करान पानसय फरान रूदस नशुम चोनुय यादय। नादूय।

हेमव भव भय हर कर नुनु अनुगृह युथन बाह् बडर
कर स्मृण चोन भोतिम रात दुह प्रेम संवादय नादय लायान छुस।
बोजतम ईश्वर रोजतम सनि दान प्राण स्यान्य चिय अर्पन।
सर्पराज वलिथ छुय हृठि मटि छुय म्योनुय चिय
हे प्रणत पालय नाद य लायान छुस॥

भक्ति भाव चान्युक यमि माने जानुय तमि मोन सोरय शिव रूपय।
जानुन सत रुपयचय नादबिन्दु रूप नादय लायान छुस
वाद प्रवाद त्राविथ जीव रोज स्योद सादय
व्याध कासि पान "कल्पस" बोजत यि थवुन यादय नादय
लायान छुस॥

नाद रूप परमा नन्द आनन्द कन्दय जन्मकि फदय मुकलाव।
नाव चोन बुड छुम वुन छुम न यिवान केह् बोजतं संबादय
नादय लायान छुस॥

(१६)

कपारि उच्छोन छु चुवांपरी

सम्पूर्ण जगदेव नन्दन वनं सर्वोपि कल्पद्रुमः
गङ्गा वारि समस्त वारिनिवहाः पुण्या समस्तक्रिया।
वाचः प्राकृत हंस्कृतः श्रुतिशिरोवाराण सी मेदनी
सर्वविस्थितिरस्य वस्तु विषया दृष्टि परं ब्रह्माणि।

(अर्थ)

जिस ने परं ब्रह्मका साक्षात्कारकर लिया है, उसके लिये सारा संसार नन्दनवन है, ससस्त कल्प वृक्ष है संम्पूर्ण जल गंगा जल है, उसकी सारी क्रियाएं पवित्र हैं उसकी प्राकृत होय संस्कृत हो वेद की

सार भूत है उसके लिये संपूर्ण भूमण्डल काशी (मुक्ति क्षेत्र) ही है तथा और भी उसकी चेष्टायें जो जो हैं सब परमार्थ मयी हैं।

कपार्य वुछोन छु चुवापारी अस्य चारी जानव कया।
वाह् कोर तिमव यिमव तुजि खारी अस्य चारी जानव कया
प्रथ तरफ गत करान सुकुनय् यम्यसनाली कुलि आलमू
तम्य पननि मेह्र कत्याह् तारी अस्य चारी जानव कया
युस छुनूर तय सुय नूरानी पानय नारण सच्चिदानन्द
यसनिश पाद गव यि जगत सोरय पानय कर्तारी अस्य चारी
जानव कया

सोहं शब्द ब्रह्म भ्रम जाल मुकलाव नावछम लजमच धरस।
मानस सरस पंपोश फुलरावुम धवुम पननि दरवारी अस्य
चारी जानव कया।

कत्याह् करान विल जारी कत्याय पूजान पोश चारिचारी
कत्याह् शमिथ नमिथ रोजान मितिदिम अनवारी अस्य
चारी चानव कया।

कह् छि ग्यवान यिवान केंह् छि ग्यविथ भाविथ छरी।
परी यम्य ढाय अछर प्रेम की सनिथ भवसरस तरी
अस्य चारी जानव कया।

कोताह् वनोव वनुव गव सनुन केंह् नेह् इमव् लभ्
तिमन लगव पारी अस्य चारी जानव कया।
सन्त स्वरूपुक बूजितव संवादय नाद विन्दस नमस्कारा।
तारदित "कस्पस" पननि वादय साधन हुन्दिस सादस पारी
अस्य चारी जानव कया।

(२०)

गूकुल त्राविथ

सदैव पाद पंकजमू, मदीय मान से निजमू।
दधानमुत्तमालक नमामि नन्दबालकमू।।
समस्त दोष शोषणं समस्त लोक पोषणमू।

समस्त गोप मानस नमामि नन्द लाल सम् ॥

(अर्थ)

जिन्हों ने अपने चरण कमलों को मेरे मन रूपी सरोवर में स्थापित कर रखा है उन सुन्दर अलकों वाले नन्द कुमार को नमस्कार करता हूं। तथा समस्त दोषों को दूर करने वाले समस्त लोकों का पालन करने वाले और समस्त ब्रज गोपों के हृदय तथा नन्दजी के लाल सारूप श्री कृष्ण चन्द्र को नमस्कार करता हूं।

गूकुल त्राविथ गवय गोपाल दूर अस्य करोस गूर गूर लोलो।
कन दूर सोन यूरि यियि पानय तस् रुस कुस जहांनये।
वस कुन वुछिथ फुलान दिल गछाम भेद भाव दूर।
अस्य करोस ॥ ० ॥

ओस असि सूत्य मारान छाल बाल बालक हिथ चुवापारि।
पारि पारि लगव तमिस यमिस हित् गवअक्रूर दूर।
अस्य करोस गूर ॥ ० ॥

गूकुल कुय जीवतय जड पन पन गोमुत प्योमुत सुन सान।
मान तिमन ओस सोन बालयार करान ओस अस्य सूत्य चूर।
अस्अ करोस ॥ ० ॥

गूकुल वासी आस्य उदासी अस्य जपान कृष्ण कृष्णय।
अछिव त्रावान आसि अशिके घारयिवुछन ओस दूरि नन्द गूर
अस्य करोस ॥ ० ॥

दुह अकि उद्धव जी आवसमजावनि वनुनक् निर्गुण वादा।
वुनहस गोपियव त्राविवयि शुष्क ज्ञान असिछि अम्यनिश दूर।
अस्य करोस ॥ ० ॥

गोपीनाथ सोन उद्धव जी अस्य छिन जानान गुणातीत।
चोनवनुन अस्य कया करि सोन कृष्ण चन्द्र पूरिपूर।
अस्य करोस ॥ ० ॥

बूज स्यठाह निर्गुणवाद मनस छुन श्रृपानयि संवाद।
लय् अस छन वछ दिल दारि वारि कति यिमव सोन शाम बबूर।
अस्य करोस ॥ ० ॥

हे उद्धव कनथव सानिन कथनय अछिनय मंज बसिथ सुया।
गवदूर पूरि पूर मूरि मूरि लुग नार सुनसानगय शालमार।
कुरुन जिगरण पारपार वनत यि कुस दस्तूर अस्य करोस
गूर गूर लोलो ॥ ० ॥

हे घनशाम मरोज दूर सूर गव प्रेम नार कायायिन
दित दर्शुन कर वर्षुन असिछि चिय रुस बेशूर अस्य करोस
गूर २ लो लो ॥

चिय रुस गोकुलकुय गुल जार ताव दुदमुत यिथ पाठय।
"कल्प" दुदमुत कल्पपिट हावुस स्वरूप पूरि पूर करि गूर गूर
अस्य करोस ॥ ० ॥

(२१)

ॐ नमो भवान्यै

अयः स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेम पदवीं
यथा रथ्यो पाथः शूचिभवति गङ्गौघ भिलितमू।
तथा तत्तत्पपायैरति मलिनमन्तर्मम यदि
त्वयि प्रेमणा सक्तं कथमिव जायेतविमलमू।

(अर्थ)

जिस प्रकार लोहा पारस से छू जाने पर तत्काल सोना बन जाता है गलियों का जल गङ्गाजी में पढ़ कर पवित्र हो जाता है उसी प्रकार भिन्ना - भिन्न पापों से मलिन हुआ मेरा अन्तः करण यदि प्रेम पूर्वक तुम में आसक्त हो गया, तो वह कैसे निर्मल नहीं होगा।

पृथिव्यां पुत्रंस्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः
मदी योऽयं त्यागः समुचितमिदं तो तव शिवे,
कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥

(अर्थ)

मां भूमण्डल में तुम्हारे सरल पुत्र अनेकों हैं और उनमें एक में विरला ही बड़ा चंचल हूं तो भी हे शिवे मुझे त्याग देना तुम्हें उचित नहीं क्योंकि पूत कुपूत हो जाता है पर मां कुमाता नहीं होती है।

(२२)

राज्यरानी

राज्य रानी रान्य व्रारी कास्त असि खारी।
असि योर आय सारी बोजत सात्र विलजारी। राज्य ॥०
च्ये वनान भवानी च्य जानान ज्ञानी दानी।
दित स्यज वाणी दयायि चानि कम तारी। राज्य ॥०
नव दुर्गा चय महा शक्ति चय मुक्ति चय।
चय कर्मा कर्म व्यवहारी अस्यति करत पननि यारी। राज्य ॥०
ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश देवता सारी।
जगतच माज्य चय पिता चय दाता चय चय शिशि धारी।
राज्य ॥०
आय असि दोरान योर कयाजि छकन करान गोर।
सोर छुन यति केह आसान भासनाव सिंह सवारी। राज्य ॥०
चय माता महाज्ञा दिवान छक दीवनति आज्ञा।
सारी रोजान दस बस्तय वनान चिय छिय हारी। राज्य ॥०
कोताह वन पनुन हाल वननसति रुदुम न वार।
खार कुरुनस जीटय क्रीटि संसारी। राज्य ॥
राज्य रानी हुन्द राज्य बोड ताज लागिथ कुलि आलमुक।
पादन लगस पारि पारी राज्य रानि रानि व्रारी। राज्य ॥०
वन कया चौन बजर कजर गछान सुरित तत्।
पथ "कलस" सत् चानी करतस् पज यारी राज्य। राज्य ॥०

(२३)

जै जगदम्बे

लक्ष्मी माता भाग्य विधाता त्राता हर दर बारी।
कासुम खारी भासुम चुवापारी माज्य लगय पारि पारिये ॥

जया रूप जय असिनय चेय देव संग्रामय आय सारी शरण।
त्रि कारण ति लागान पोश चारि माज्य बलगय पारि पारिये ॥

छक् च सिद्धि दात्री क्षेम करी अरी रोजान आय चानि दरबार।
इम चि सुरान तिमन छक अमये करी माज्य ब लागय पोश चारि चारिये ॥

शबरी रूप म्य शूरिस थवतम क्रूर जीवन निश दूर।
पूर्ण परमा मृत धारी माज्य बलागहय पोश चारि चारि ॥

भैरवी पैरवी करुम कामनायन करह हर क्षण गायन चोन।
भूतन त राक्षसन छक संहारी माज्य बलागय पोश चारि चारि ॥

त्रिपुर सुन्दरी सुरहाथ अन्दरी निदरी मिति उजनावतम।
हावतम स्यज वथ कासतमू लाचारी लागहय पोश चारि चारि ॥

जगतच माज्य यलि राजि आसि "कल्पस" तिलि तस लगिना भवसर तार।
तारा नाव सूति तारण हारी लागहाय पोश चारि चारिये ॥

(२४)

ब आमुत माज्य

ब आमुत माज्य दोरान चिय रुस गोस हरान लो लो।
थवतम पदम पादन निश संसार दुःख चलिम लो लो। ब माज्य ॥

गछुम ध्यान चोन रोजुन रातस त दुहस हृदयस मज।
युथम्य केंह सारिम तिथ् म्य दिम व्यस्तार लो लो। ब माज्य ॥

ब आमुत ओसुम चिय सुरने संसार परित्र छोननसब्।
भास दित कासुम ग्रांगल दिम पनुन आसरय लोलो। ब माज्य ॥

तमह् छुम यथ दिलि जिगरस बोजक म्यानि विलजारय ।
पानय जानान छक् सोरय ब बिय कया वनय लोलो । ब माज्य ॥
जगत माता च दाता छक् संसारचि त्राता छक ।
यि जानिथ करान सारी लोलपोशव चानि पूजा लोलो ।
ब माज्य ॥
म्य छम सत् हे भवानी दिम वाणी दिम बोड विमर्शा ।
सुय छुम बोड हर्ष ब पोश पूजा चिय करय लोलो । ब माज्य ॥
तर किथ् पाटय भव सुन्द्रुस तौर युतामन मुचरावह्म ।
क्षण क्षण ह्नि आसव छन चिरुस म्य आश केह् लोलो । ब माज्य ॥
माज्य च छक दयावान बज्ञान जानय न केह् ।
"कल्प" पिट आस पह्‌रान जाम नाल कड्डुम लोलो । व माज्य ॥
क्षमा करतम पापनय शापनय करतम दूर ।
सूर करतम काम क्रोधस लोभ मूह्‌स नाश लोलो । ब माज्य ॥
यि छम चिनिश आश आश पूर करुम छुस
चोन आसरय लोलो । व माज्य ॥

(२५)

आध्यात्मबनय

अज्ञान पङ्क परि भग्नमपेत साय
दुःखालयं मरण जन्म जराव सक्तमू ।
संसार बन्धनम नित्यम वेक्ष धन्य ।
ज्ञाना सिना तदवशीर्यं विनि श्चयन्ति ॥

(अर्थ)

जो पङ्क में सुने हुये अज्ञान निसार दुःखरूप जन्म जरा मरणादि समन्वित संसार बन्ध को अनित्य देख कर उसी को ज्ञान रूपी खड्ग से काट कर आत्मतत्व का निश्चय कहते हैं वे पुरुष धन्य हैं ।

" आध्यात्म बतय कनय बोज तम ॥ "

आध्यात्म वनय कनय बोज तम रोजनम ह्‌रमुख सन्निदान ।
ध्यान दारणाय निश म करुम छिनय रोजतमू हर मुख सन्निदान ।
आध्या ॥०

शाम सुन्दर

न सृष्टेस्ते हानिर्यंद्विहि कृपयाऽवसिचमां
लन नेके गुप्ता व्यसनमिति तेऽस्ति श्रुतिपधि।
अतो मामुद्धर्तं घठय मयि दृष्टि सु बिमला
न रिक्मां मे याञ्चो स्वजन रतकर्तुम व हरे।

(अर्थ)

हे भगवान्! यदि तुम कृपा कर मेरी रक्षा करते हो तो इससे तुम्हारी सृष्टि मर्यादा की कोई हानि नहीं हैं। तुम ने अनेकों की रक्षा की है हमारे कानों में यह बात पढ़ चुकी है कि तुम्हें शरणा-गतों रक्षा करने का व्यसन है। अतः मेरा उद्धार करने लिये मुझ पर भी अपनी निर्मल दृष्टि डालो अपने भक्तजनों की रक्षा में तत्पर रहने वाले हे भगवान मेरी प्रार्थना को असफल न करो।

शाम सुन्दर वनकया चानि लीलाय ध्यान-वुछमक जाय जाय।
ज्ञान वर्धक पान पशुम सुषमा पूरम इडाय सूत्य।
पिगला भाष करान प्रथकालय। ध्यान॥
अज्ञान अहंकारण कम् कम् वाली खाली अथ दारिथ गय।
पयम्य दिम दय जाननुक मनुक छुम कुन अभिप्राय॥ ध्यान॥
दयायि रोज असिप्यठ श्री अवतार धारी पारी लगोय चट
घट ग्रांगल।
आस जन्मस चाञ्नि हास त्रासय चाम कुरुम न जांह वाय॥ ध्यान॥
वनान आस बोजतम जारय आर यिय तनय म्य "कल्पस" प्यट।
दिलस मंज छम आश चानी व अज्ञानी च छुक बोडदय्॥ ध्यान॥
वनान चिय दीनबन्धु क्षीन गामत्यन् रछान आख चय।
म्यति रछत पननि कृपाय मकर वाय वुछमक प्रथ जाय॥ ध्यान॥

दितम श्रीराम हिस कस वन लोद खोतमुत पापन हुन्द ।
ग्युन्द ग्युन्द मत करतम दितम दर्शुन छुस चानि प्राय ॥ ध्यान ॥

(२७)

ब पोशडाल्य निम् अमरनाथस्

ब पोश डालि निम शिवस्थानस् छम ईशनस-पोश पूजा ।
अज पूनिम अमर नाथत्रि अमरेश्वरस पोश पूजा ॥
यथ पोश वर्षुण करान देव सारी तारी यिमि भव सरस ।
प्राराण भक्त बरस तस परमेश्वरस पोश पूजा ब पोश ॥०

युसय साकार सुय निराकार इवान अकार बकार युस ।
कुस वनि कमि जोन तमिसुन्द वजर तत् ज्योति शिवरूपस
पोश पूजा । पोश ॥०

यथ रूपस आय वुछान वहुरूपय प्रथ देशस आय वुच्छा एक रूपस् ।
पय यिमव लोभ तिमव जोन सत् रुपय प्रिय मुक्तेश्वरस पोश पूजा ।
पोश ॥०

यस वनान हरिश्वर सुय गव सुरेशुर वृषभस् युस खसानसुय
गव महेश्वर ।
पूजा यस कर ब्रह्मा त विष्णन् तस ज्योति लिङ्गस पोश पूजा ।
पोश ॥०

युस प्रभु व्याप्त शरिसय मंज यस मंज जगतुक सोरय संज ।
युस पात्र पानय पानस मंगान तस ज्ञान गम्य ज्ञानेश्वरस
पोश पूजा । पोश ॥०

युस तोषाण आव होश मतिन युस वुछान अन्दरिमन व्रचना।
सुय ज़ानान ज्ञान प्रचन तस अदि देवस पोश पूजा।
कुस हिकि डुगदित सनिस सुद्रस आशतोष यसरोजि दयायि।
दया सागर दया कर "कल्पस" कल्पे श्वरसय पोश पूजा।
ब पोश ॥०

(२८)

द्राय गोपी सासो सास

द्राय गोपी सासो सास ओसुख रास गिन्दोनुय।
सुय ओस तिमन भास ओसुख लास लभोनुय।
मुत मन ओसुख अर्पण कोरुमुत वरमुतआसुख शाम।
हा त्रान आस नजार खासो खास ओसुख रास गिन्दोनुय। द्राय ॥
पकान आय जोरि २ लोरि अथन कयथहिथ
नित् आस सुबन शामन गामन गामन निर्वास ॥ द्राय ॥
मुरली शब्द यलि आस बोजान कन दारिथ आस रोजान।
करान आस शब्द संवाद नाद ओसुख नाद बिन्दनुय।
वुछान आस हुपारि यपारि ओसुख यिवान भास। द्राय ॥
सोरय त्राविथ आस रोजान आस पास ओसुख रास गिन्दोनुय।
पत पत गोपी वुछान आस तिमन द्रायाति कुनय भास। द्राय ॥
आस करान उल्लास सास सूर्युक तीज धरान।
नचि नचि गछान मस चवान रस अछिव सूत्य।
कूचि वुछिथ हिस डलाग कूचि समजान दासानुदास। द्राय ॥
योगी श्वरनि बड माया काया धारित आमुत योर।
सार जोन मुत ज्ञानवानव करान यिम ॐ अभ्यास। द्राय ॥
केह आस असान, केह आस गिंदान
रिन्दन ओस रस्चनुक चाव आसुखयी भास। द्राय ॥
रास रस्युल कोताह जान योगियन जानिथ लुग मन
रुनिन हुन्द मधुर छुन्य पुष्यपादन करान खास। ओसुख ॥

बिन्द्रा बनुक त्रिभुवन लाल लाल फेरान २ योर चाव। द्राय ॥
भक्तन बोड रोवुन भाव राक्षसन वुछिथ चाव त्रास। द्राय ॥
मोर मुकट ताज दारिथ पीताम्बर सूति पान पारिथ।
वनमाल हठि पारिथ रछुन "कल्प" छु दासानुदास। ओसुख ॥

(२६)

श्री राम रटह् चानी चरण

श्री राम रटहय चानी चरण तरण तारण छुख म्योन
राम चन्द्र कामना कर म्यान्य पूरण यमि लारुन संसारय न केह्।
दीह् अभिमानय व्यीह् गाम पानस ध्यान धारणाय मंज थवुम मन्।
श्रीराम ॥०

श्रीराम टोठान छुक भक्ति भावस हावस म्यति तिथुय छुम
दिम चरण शरण यिमव अहल्या तार कारचान्य जानान संसार
श्रीराम ॥०

जन्म जन्मय जन्म कूति दारिम खारिम पापत्र बार्य पानस।
ज्ञानदिम कासुम अज्ञानस बासुम वत्र चुवा पार्य आमुत शरण
श्रीराम ॥०

भव सद्र तापय तपनय आस शापय अथि छुमन इवान केह्।
नेह् लबनावनम पननि संवादय मोह् अन्धकारय करतम दूर।
श्रीराम ॥०

चोन म्योन चठतम खटतम मत पान सानहितम दयाल।
नाल ब रट्हाथ खट्हाथ मनि मंज कनि मंज यथ पाटय लाल।
श्रीराम ॥०

हे भक्त वत्सल मुक्ति छुसन मंगान ठगान आम काम क्रोध
बडि चूर।
म्यूर आम लूभ मूह् सूत्य कर तम भय दूर चय छुक पूर्ण परमेश्वर।
श्रीराम ॥०

आख चय भूमि प्यट अवतार दारिथ मरिथ कत्याह पावी चिय
तारिथ ऋषि मुनि बियि महाज्ञानी फानी यिमव जान्मुत् ओस
श्रीराम ।।०

कुस वनिथ चोनय बजर म्यति जिवि छुम गच्छान कजर।
अख नजर सिजकरत "कल्पस" युथ यियस अल्हादय नादय
लायान छुस । श्रीराम ।।०

(३०)

श्रीराम मेरे चित्त में रमणकरे

वरेण्यः शरण्यः कपि पति सख श्चान्त विधुरो,
ललाटे काश्मीरो रुचिर गति भङ्ग शिश मुखः।
नराकारो रामो यपि नुतः संमृति हरो,
रमा नाथो रामो रमतु ममचित्ते तु सततमू ॥

(अर्थ)

जो श्रेष्ठ है, शरण देने वाले हैं सुग्रीव के मित्र हैं अन्त से रहित हैं जिनके ललाट में केसर का तिलक है, जिनकी चाल अति सुन्दर है मुखार बिन्द चन्द्रमा के सम न आनन्द दायी है, जो मनुष्य रूप में प्रतीत होने पर भी राम (योगियों के ध्योय परंब्रह्म) है, यती श्रवरगण जिनकी स्तुति करते हैं जो जन्म रूप संसार के हरने वाले हैं, वे लक्ष्मीपति श्रीराम चन्द्र भगवान मेरे चित्त में रमण करें।

महा योग माया विशेषानु युक्तो विभासीश खीला नुराकार वृत्तिः।
त्वद्धा नन्द लीला कथा पूर्णं कर्णाः सदानन्द रूपा भन्तीह लोके ।।०

हे भगवान् ! आप अपनी महा योग माया के गुणों से युक्त होकर लीला से ही मनुष्य रूप प्रतीत हो रहे हैं। जिनके कर्ण आपकी इन आनन्दमयी लीलाओं के कथामृत से पूर्ण होते हैं, वे संसार में नित्यानन्द रूप हो जाते हैं।

भगवान् ज्ञान दिम

भगवान् जानदिम भवसर तरनचि युथ चलिम ग्रांगल इन गछनच।
चूर चोर फ़रिम करिम कम कार नार बास्योम चोन गुलजार।
दुचार गोस बोस छुम फुट मुत रोटुम् चोन दामान ह्नि सान भगवान ॥०
देह् अभिमान चिनिश पान छिन गोस सन्योस न व्यवहारस।
चातक वृत्तदिम युथ वुछ घनशामस नयन मि रामुन करह् ध्यान
भगवान ॥०

कोताह् वनय लोगमुत छुम सनय वनय वोजतम थवतम ध्यान।
प्राण म्यानि गछनय चिय अर्पनय क्षण क्षणय भगवान ॥०
भगवान कया वन चानिस बजरस नाव चानि तरि पापी अपोर।
म्यति त्रावत नजरा सिजरा गछिहेम तन मन करय अर्पन। भगवान ॥०
असार संह्रार सोरदाव न कासि वासि वति गोस दर अजाब।
कर कया वामुत छुस ठंगय मूह् मंगय चथ प्योमुत जना।
भगवान ॥०

तुल तम अमिनिश शान्त सत्संगय रंग रंगय बास्तम पूर।
म्यति त्रावत नजर सिजर गछिम लाने वानि लुगुमुत छुस भीतेमक्षण
भगवान ॥०

भगवान चय छुक जगतस् रछवुन ब ओनतरोन क़या जान नुन।
आशा छि "कल्पस" भाष दिम ज्ञाननुक मननुक छुस क्षण। भगवान ॥०

रुञि छुन्य छुन्य

लक्ष्मी पते कमल नाभ सुरेश विष्णो
वंकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन् पुष्कराक्ष।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासु देव
देवेश देहि कृपणस्य कराव लम्बमू॥

(अर्थ)

हे लक्ष्मीपते! हे कमल नाभ! हे देवेश्वर! हे विष्णो! हे वैकुण्ठ! हे कृष्ण! हे मधुसूदन! हे कमल नयनं! हे ब्रह्मण्य! हे केशव! हे जनार्दन! हे वासुदेव! देवेश! मुझ दीनको आप अपने कर कमलका सहारा दीजिये।

रुञि छुन्य करान शामन शाम हाय आमय गाम गामय फीरित आम।
राम राम सूय घन शामय गाम गामय फीरित आव।
वथिवी सखियव पत्ब्रोंठ दीरोस आवरोन प्रथ दोरे मंज।
संज करित्रो मुरलीधर यूरिकुन आवहय। गाम गामय॥

मोर मुकट यस् शेरि शोभानय जानान यिजानय सोन।
चोन्न म्योन चटिथ युस छु अभिरामय सुय रमा रामय
गाम गामय॥

युस गोकुल कुय गोपालय सुय जगतुक रक्षपालय
यशोदाय युस दिवान डालय नन्द लालय गिन्दने द्राम। गाम गामय॥

यसंज देवता वुछान खेलय मेलय लुगमुत गोकुलस।
बाल बालिकाय छाल मारान प्रारान छारान वन्न वनय।
गाम गामय॥

देवकी हुन्द लाल फुलय काली नागन यस् पान वुलय।
भूबार सूतिन गोपालन कोर कुलय गव चरणन शरणय।
गाम गामय॥

अर्जुन दीवय यसुन्द बुडशिष्य यमिसय होवुन विराठ रूप।

गीता ज्ञान दितुनस ओस सु मोहृकिन्य खामय। गाम गामय ॥

कुस करि वर्णन लीला चाञ "कल्पस" वञ छि आशा चाञ।
हे निर्भय निरामय आसिनय चानिस रूपस जय जय जय।
गाम गामय ॥

(३३)

संसार जालय वलनय आस

आछ छम चानी होश दिम सिजरुक रुचरुक सुयछुम बोड़ बहानय।
भ्रम् बाजिगारय यमि संसार जालय वलनय आस।
संसार जालय वलनय आस ॥

आमुत छुम खुर कर्मलानिस प्रागिस कासुम सुय खुर।
शुर जानिथ मानिथ लाचारय करुम दयायि हुन्दय वहानय।
संसार जालय ॥

आशा वानन् हुन्द छुक आशा ब्निराश गोमुतछुख चुवापारी।
वायं म्यति दितम छिम गामति सितम कास्तम दिलस सनय।
संसार ॥

दितम वारि पानस कुन यिनस दोहस्त रातस करह चोनुय ध्यान।
पान पुशरुमय जानदितम मत करतम क्रिजिल वोञ। संसार ॥

सिजरा पजरा दितम यमि जन्मय ब्यीहय कत्याह गाम।
मुख हावतम् थावतम हिस यिय भ पुज अल्हदय। संसार।
बनांन चिय छिय दिगम्बरय चिय छि वनान हरिनाराण।
करिय करान छुक ब्रह्माण्ड उत्पन्न व्युत्थानुक छुक महाप्रकाश।
संसार ॥

कोताह आय वनान वेद त पुराण भिय गीता त उपनिषध।
आदि पुरुष प्रथकालय सारिवय वोनमुत क्षण क्षणय। संसार ॥
लोल मतिन होल गछान मृच्छान तिम चानि माये।
दाय "कल्पस" दित छुस योहृय अभिप्राम।
संसार जालय वलनय आस ॥

ओम नमः शिवाय

नागेन्द्रहार य त्रिलोचनय भस्माङ्ग रागा महेश्वराय।
नित्याय शुद्धायदिगम्बराय तस्मै "न" कराय नमः शिवाय ॥१॥

(अर्थ)

नागेन्द्र जिनके कण्ठ में है तीन नेत्र धारोजये हैं भस्म ही जिनका अङ्गराग (अनुलेपन) है; दिशाएं ही जिनका वस्र है (अर्थात् जो नग्न हैं) उन अविनाशी महेश्वर 'न' कारस्वरूप शिवको नमस्कार है।

मन्दाकिनोसलिलचन्दनर्वाचिताय नन्दीश्वरप्रनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुसूर्पजिवाय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥

(अर्थ)

गङ्गाजल और चन्दन से जिनकी अर्चा हुई है, मन्दार पुष्प क्या अन्याय कुसुमों जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रथम-गणों के स्वामीमहेश्वर "म" कारस्वरूप शिवको नमस्कार है।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-सूर्यायदक्षाध्वस्नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्में 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥

(अर्थ)

जो कल्याणस्वरूप है, पार्वती जी के मुखकमलको विकसित (प्रसन्न) करने के लिए जो सूर्यस्वरूप है, जो लक्षके यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैलका चिन्ह है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ 'शि' कारस्वरूप शिवको नमस्कार है।

बसिप्ठकुम्भोद्धवगौतामाय-मुनींद्रदेवार्चितशेखराय।
चन्दार्कवैष्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय
यक्षस्वरूपाय जयधराय ॥४॥

(अर्थ)

वसिष्ठ,- अगस्तय और गौतम आदि श्रेष्ट मुनियोंने तथा इन्द्र

आदि देवताओंने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र है उन 'य' कास्वरूप शिवको नमस्कार है ।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवा दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

(अर्थ)

जिन्हों ने यक्षरूप धारण किया है, जो जटा धारी है जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष है उन दिगम्बर देव "व" कार स्वरूप शिव को नमस्कार है ।

पञ्चाक्षरमिद पुण्यं यः पठे च्छिवसंन्ति धौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

(अर्थ)

जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर का पाठ करता है, वह शिव लोक प्राप्त करता है ।

(३५)

शंभो बोजतम वारय

शंभो बोजतम वारय लोल आम कोताह व प्रारय
संसारन कुरुनस संगसारय लोल आमकोताह ब प्रारय
वन कस पनुन दोदय पापुनू लोदय खुतम पजन प्येठ
बिय्य गजिरिम छुख अन्दय रछुम आनन्द कन्दय लोल आम ॥०

स्यञि नजरि ब तर तारय मुकलावुम सुदूकि नारय ।
च छुख शिव शंकर कासुम थर थरय चिरुस ब कया करय । लोल ॥

प्रारि प्रारि थकुस गंगाधरय कर कया तत् च्येरुसब
हिखनय म्योन मटि प्रारान वोतुम यचकालय । लोल ॥

त्रावतम म्यति अख नजर पजर छु च छुक् भक्तवत्सल ।

बति आख पापमलिन कत्याहृदितुथ तारय। लोल ॥०
आश चात्र दूयोस वत्र दिनि गन्य आम बुथि खड तय बंग।
रंग कम हाविथम भस्माधरय लोल आय कोताह् प्रारय॥
लोल ॥०

केछा करतम दोनस सीनस मंज छुम बुड अरमान।
पान पुशरावमुत "कल्पस" हरिहरसय लोल आम कोताह् प्रारय।
लोल॥

(३६)

दुपट्ट वलिथ खासो खास

दुपह् वलिथ खासो खास दपान रास गिन्दनि लोग
"भक्तन" भाव वरुन खास सास सूर्य चमकनि लोग।
न रूद तति आमत खास दपान रासगिन्दनि लोग।
दुपट्ट वलिथ।

नन्द लाल लाल जगतुक साल करान गोपियन आव।
ओस तिमन्ति तसुन्द भास दपान रास गिन्दनि लोग।
दुपट्ट वलिथ॥

रास लीला आस वडवीला खेला करान ओस गोपी नाथ।
कुनय आसिथ ओस सासो सास दपान रास गिन्दनि लोग।
दुपट्ट वलिथ॥

गोकुल कि जनित जन वासी चिय रुस आस्य गच्छान उदासी।
वदान तिम आस्य श्वासो श्वास दपान रास गिन्दनि लोग।
दुपट्ट वलिथ॥

रास रसय मसगय कात्याह कत्याह गय दीवानय।
केचन नारायण सुन्द भास दपान रास गिन्दनि लोग।
दुपट्ट वलिथ॥

देवकी हुन्द लाल फुलय जसुदाय हुन्द गोपालय
माल छनिथ पालना करि अस्य छि तम्यसन्दि दासानु दास
दपान रास गिन्दिनि लोग। दुपट्ट वलिथ॥

ह्यो "कल्प" क्या छुक करान सुरान सुरान सुत्योख चय।
छुत्र बोज रुत्र शब्दुक रोज पासो पास दपान रास गिन्दनि लोग।
दुपट्ट बलिथ ॥

—o—

योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां
सञ्जीव य त्यखिल शक्ति धरः स्वधाम्ना।
अम्याश्व हस्त चरण श्रवण त्वगादीन
प्राण न्नमो भगवते पुरुषाय तुम्यमू ॥

(अर्थ)

जो सर्वशक्ति संपन्न श्री हरि मेरे अन्तः करण में प्रवेश कर अपने तेज से मेरी इस सोई हुई वाणी को सजीव करते हैं तथा हाथ पैर कान ओर त्वचा आदि अन्य इन्द्रियों को भी चैतन्य प्रदान करते हैं, वे अन्तर्यामी भगवान आप ही है आप को प्रणाम है।

(३७)

युस दीव वाणी

युस दीव वाणी त प्राण वजनावान त्रावान युस जगतस सुप्रकाश।
यस मंज सोरुय संसार भासान तस देवादिदेवस जय जय कार।
युस दीव ॥

वनान केह यस निराकार वनान सुस लोल साकार
दिवान ह्विस धारित अवतार तस देवादि देवस जय जय कार।
युस दीव ॥

यस वनान सारी दीन दयाल यम्य वक्त वक्तय रछि लाज।
तछ्य वछ् पापियन कुरनक संहार तस देवादि देवस जय जय कार।
युस दीव ॥

तस ह्यू कुस छु पतित पावन यम्य सारिनय लाज रछ वक्त-वक्तय।
सक्तय आसान कुरुन भासान नुनय आसिथ दूर आसान।
युस दीव ॥

चिय रुस सोर कुस छु म्योनुय चोनुय आसिथ गोस गार।
प्रथ रूप भास्तम इन गछुन कास्तम युथ चलि यम तूर।
युस दीव।।

कत्याह इवान कत्याह गछान कत्याह दिवान दम्।
यिम रंग वुछि वुछि थकुस बडिदय जै जै चिय।
ब कया वनय दितम दर्शुनुय पापन गछिम सूर। युस दीव।।

कर सना वछहाथ सृजान हार नार वलिजि ष्यठ छुम्। युस दीव।।

ॐ धारिथ मनस पारिथ त्रानिथ रंग रंग जामय।
अपोर तरनुक छुम म्य हावस क्याजि रुदक दूर। युस दीव।।

"कल्प" सन्दि हे बलरामय शाम गोम कुत।
युत यिथ दुदर वामय वत्र राम रामय त्रकर पूर।
दूर करतम व्हीह पानस जानानसं जानवन्दहय। युस।।
युस पूर्ण परमेश्वर पूरिपूर तस प्रणामय। युस दीव।।

(४०)

नठ् चलिम बलिम दोद

अज् अन्तन शाम साल नाल दिथ् रठन नाल माल मतेवते प्यठ।।
लठ् चलिम बलिम दोद जोद करिथ परिथगोम।
मायतस्हजि मस्म्य चोम यीहा गोम यीहा गोम।
यीहा गोम।।

प्योम तसुन्द दूरिर ब्रुगय सुगय छाजोम यमि संसारी।
परि लगह आदन बाजिस यिम मद वाजिस कुस मसचोम।
यीहा गोम।।

शाह खस बस बस बस करान परान यिम् तिमगय निहाल।
बाल प्रारान छारान त गाराम प्राराण प्राराण अफसोस क्षोम।
यीहा गोम।।

वत्रदिवान अन्य ब गयस् थन्य व्यवान वछहथ दूरे।

नूर चशामन मेज संज करि करि तालिडोठ व्युठ व्युठ य्योम।
यीहा गोम ॥

वनान कत्याह चिय मस्तानय् कमि अस्तानय् छाडोथ च्य।
द्वय त्रावित्थ छिचात्र शाफगत अिमव जोनु तिमन चोल भोम।
यीहा गोम ॥

यन च छिन्न गोख् तन ब रावस सावथस तेज कडिनय्यठ्।
छुक लगिम यथ् पान्स म्य जहानस् मंज कुस दोम।
यीहा गोम ॥

नट नट् छम यथ वसि खसि मशि कति म्य चोनुय श्रेह।
चानि लोलय म्यति म्यूठ मस चोम। यीहा गोम ॥

काल्य बाल्य यार मनिमज खठथय फठनस आमुत चिय रुस।
"कल्प" काल बाजि गारन कसकनथुव यीहिस् वत्र य्योम।
यीहा गोम ॥

(४१)

तार वोल तार दिय पानय

तार वोल तार दिय पानय हाजो नाव छय बहानय,
सोरय पुशराव तसप्यठ यसमेज कुलि जहांनय
तार ॥

युन गछुन त दयुन् हयुन सोरय तोरय हिथ आमुत जीव,
यि् यिम जोन तम्यस हयू कुस कमं वानय हाजो
तार ॥

पान्य पानस चार पत्र दय रोजा न मनस मंज,
ध्यानस्त ज्ञानस मज कुनय द्वय त्राव छाव जहानय।
तार ॥

नाव तसन्दि रेग रेगय, प्रगय पूरित रोज बेरंगय।

संसार सागरस तार दिवान पान्य पानय बाकी बहानय।
तार॥

हाजो तुलत खूरय दूरय मजिल छुपकुन,
थकुन् छिनुन् गछि नाव चात्र आसानय। तार॥

हा पान त्राव मान मानी पान पुशाराव तमिसलो,
यि सिय् करान सारी प्रणामय युसछुपरम धामय।
तार॥

मुलि वठ् शाह सिजरकय गोशे मस होशि जांह डल।
कज़ कर "कल्प" सूछु अलम गीरय मुकलावि पानय
हांजोनावछयवहानय। तारवोल॥

(४२)

नर ही नारयण

"हे नारायण के नर कुछ कर" कयों बठकते फिरते घर घर
आया तुम ब्रहमण्ड के जिस कोष्ठमे आठो पहर गूंजता था
जहां नारायण हर ओष्ट में॥

इस धरा के दलित वर्ग में कयों होती थर थर
हे नारायण के नर कुछ कर कयों बैठते फिरते हो घर घर
जहां पतित पावनी गंगा बहती जहां अद्धत वानी गूंजती॥ हे॥

न मालूम तुम्हारे अज्ञात मस्तिक में कया सूजती
स्वार्थ की जिव्हा रूप घर कर किस को नहीं नोचती जरा कुछ डर
हे नारायण के नर कुछ कर कयों बठकते फिरते घर घर॥ हे॥

आना प्रकृति का नियम है जाना भी उसी का नियति क्रम हैं
तू कयों बनता है बेरहम भक्षक सा समज जरा
होता है रुद्धन का नाद किदर से घडी बर कर नजर उदर
हे नारायण के नर कुछ कर कयों बठकते फिरते घर घर॥ हे॥

वेदों की वाणी गाती आई महा पुरुषों की कथा सुनाते आये

गीता के उपदेशों ने च्युत को अच्युत बना कर एक बनाया
शंकर ने काल कूठ पीकर सारे संसार को बचाया ॥ हे ॥

हे नारायण के नर कुछ कर क्यों बठकते फिरते घर घर
दया धर्म और कर्म यह विश्वात्मा विश्वम्बर के नियम
धारण कर अविरत इन को यही सही सार निसारता में
यथार्थ में छिपा है मानवता का अमरत्व का इतिहास ॥ हे ॥

हे नारायण के नर कुछ कर क्यों बठकते रहते घर हर क्षण
जन्म लेकर भूल जाते अपना पन कई उछलते यहीं पर कुछ क्षण
धन वैभव को ही महान समज कर बनजाते कई बरबर ॥

हे नारायण के नर कुछ कर क्यों बटकते फिरते घर घर हर क्षण
अल्प बुद्धि "कल्प" क्या कहेगा बीत जाता है जीवन क्षण क्षण
जीवन जीवन वह कहलाता जो किसी को काम है आता
पाता न वह क्या जो होता है शंकर का अनुचर ॥ हे ॥

हे नारायण के नर कुछ कर क्यो बटकते फिरते घर घर।

(४३)

नठ् नट् छम

नट् नट् छम यथ दीह् लरि करि क्या वन्न म्य व्यवहार
वार रूदम न श्रोंठ पकनस थकनस प्यठ वोतुस बय।
च, 'ब' रजि पान पात्र पानय वलुम्य कति फलुम दिलुक पोश
होश डलिथ गोश रावुम थवुम यलि नुन बाज़ार नट् नट् ॥

यठ् मारि मारि त्रट् चालिम रूद कस सोर संसार
दीह् अभिमानय रूप कूत्य दारिम साविम अरमान पानस मंज
संज करि करि चूर रेजनाविम छाविम कूति अस्मान शुन्यस
रातस दुहस सातस क्षणसय दमदम गजरूम लोकव्यव द्वार ॥नट्॥

तूर फुलिम तसंजि कलि सुलि यलि छाडहन सुय
छल गोम नादान पानस् पानय मशरस जान
पान वन्दहस जान म्योन छुस हाज़िर वन्दस प्राण । नट् नट् ॥

सत् अक् छम प्रार यारस्‌दिवहाविम पनुन दीदार
कत्याह वनान तस लोल मुतय युतय कुस फेरान वुछिथतस
कत्याह गिवान कम कम गीत हीत छुक तस लबनुक
कत्याह छुप करिथ रूपआसय बासन दिवान बोजान सार।
नट् नट् ॥

मान मान्य छु गछान बुद्धि बोध जाय माय रोज लयस सूत्य
वाय कर आसनस् त् खसनस गाल लालस लुलि ललनाव
"कल्प" कालि नाल रटुन हिसयिथ साराण
प्राराण प्राराण लूससबयसरुस छुस ब बरान । नट् नट् ॥

(४४)

नाद बिन्द परमानन्द

नाद बिन्द परमानन्द आनन्द कन्दय् जन्म कि फदय मुकलाव
नाद ॥

नाव चोन यिम्य जोन तम्य त्रोव मान अपमानय जन्मकि ॥
इनतगछुनय ठंग छुसआमुत प्योमुत चियनिश स्यठा दूर।
सूर करतम पापन पर्ननि अल्हादय जन्म कि फदय मुकलाव
नाद ॥

लुक् चार सोरिमकरित् शुरि भाषय जवानी मंज कुरुम दीह-
अभिमान।

अज्ञान ध्वठि मेज केहनो छुसअन्दय् जन्म कि फदय मुकलाव ॥
बुजर इथ वत्र दय हितुम छाडनुय चुपारि दर लाजार।
आर इयतनय जुजरेम जन्दय जन्म कि फंदय मुकलाव।
नाद ॥

कया छम खबर सोरय सोरेम वुछान रुदम काल शाहमार।

तार सुद्रस हे बडि. दय जन्मकि फन्दय मुकलाव।
नाद ॥

ज्यूठ कोताह छु कूठ संसार मिति मुकलाव बे आर तय बे
परवाह।

प्राय चालान आव "कल्प" आनन्द वन्दय जन्म कि फंदय मुकलाव
नाद ॥

(४५)

माज्य भोजतम

चॅञ्चल्यारुण लोचन ञ्चित कृपां चन्दार्क चूडामणि
चारु स्मर मुखा चरा चर जगत्स रक्षणीं सत्पदाम।
चंञ्च च्चम्पक नासि काग्र विलस त्मुक्ता मणी रञ्जिता
श्री शैलस्थलं वासिनी भगवती श्री मातरम भावये॥

"अर्थ"

जिन के चञ्चल और अरुण नेत्रों से करुणा प्रकट हो रही है चन्द्रमा और सूरज जिन के मस्तक के आभूशण हैं जिन का मुख सुन्दर मुस्कान से सुशोभित है जो चरा चर जगत की रक्षिका हैं संतपुरुष जिनके विश्राम स्थान है शोभाय मान चम्पा के समान सुन्दर नासिका के अग्र भाग में मोती की बुला शोभा बड़ा रही है उन शैले पर निवास करने वाली श्री माता का मैं स्मृण करता हूं।

माज्य बोजतम् लोलनादा दादह कथनय दितम लोलो
होलगोम चिरुस कुस बोजिम गदा आमुत बरसतलय लोलो।
माज्य ॥

करान आय आदिपिटय त्रिकारण च्य पाद्य प्रणाम
चय छक् सर्वेश्वरी माही श्वरी बिय पानय क्रिया वती लोलो।
माज्य ॥

कयो वन ब चानिस सरुपस यथ जानुनछु बुड दुष्वार

सार जानिथ मानिथ चय सोरय म्यति दि तार भवसर लोलो। माज्य ॥
ब माज्य फोट मुत छुस मोह् समुद्रस् सतचि नावि खार म्य ह्योर।
काम क्रोध बिय लोभ शचव मित्र बनिथ रुदिम लमान लोलो। माज्य ॥
हे माज्य राज्य रानी छक च त्रयलोकी श्वरीपानय
अदेवत् देवतान्त मनुष्यन आयख रछान लोलो। माज्य॥
आश चाने छुसव रूजिथ बूजित चोनय महिमा
कया वन बिय मा च्येय ह्यू कांह् द्वोयम लोलो। माज्य॥
हे महादेवो चिय प्रणाम सुनाम सूतिन कर दया म्य
चय छक् जगत् जननी चय छक बड वाणी
हे महामाता "कल्पत्र" छक ज्ञानीश्वरी लोलो। माज्य॥

(४६)

तन छलयो

तनछलयो हाकनदूरो म्यानि नूरो यूरि वलो।
मद् वाजिथस लांजिथस दावस ओसुम चोनुयम्य श्रेह।
म्योनुय आसिथ मांहि दूरो यूरि वलो पूरि पूरो। तन॥
मस्तान म्यानि छांडत् कति करिथम कम कम बहानय।
निश वछहथ निहके नूरो हा म्यानि नूरो यूरि वलो। तन॥०
केह् वनान चिय सूर मोतय केह पोश मुतय चिय
चय आसान छुक आल गीरो, हाम्यानि नूरो यूरिवलो। तन॥
केह सिर जानिथ बेदार केचन न जाननुक चाव
केह छि छिन्न गछिथ हि्न्त आमति केह छि पानय दूर। तन॥
पन पनय गयस चात्र सनसूति कति हावय छुक
दुःख चलिम त्रावुम नजह पूरो हां म्यानि नूरो यूरि वलो। तन॥
तन वातुमकनदिवान यिवान आस्त छुम तमाह् चोन।

लोन फुलिहेम निशरोजतम मत राजतम दूर हो यूरि वलो। तन ॥
कसवन् क्या छुम गोमुत प्योमुत छुस च्येनिश दूर।
"कल्प" कल्प वेलय मेलान छुक म्यानि जहूरो यूरि वलो। तन ॥

(४७)

लालस पत

लालस पत गयस मचय साल अनहन ख्यावहन न्यामचय।
पामन लजिस खामन मंजय दामान रटहय छस आरहचय। लालस ॥
लाल म्योन नुन्द बोनय तम्य सुन्द बजर कमिन जोनय
नजर तसंज फ़ूचय। लालस ॥
लाल सालयित सोनय थवय पेश नुवतप्रोनय
आपरय दान दानय। लालस ॥
चिय रुस् कुस छु म्योनुय वन्दहाय कबील क्रोनय
यिनस चानिस करिम सचय। लालस ॥०
लाल फेरान पोश बागन नत आसि नागरादन
कन्द शरबच तस किचय। लालस ॥०
लाल बूजम निशरोजान माय लागिथ सोज बोजान
दावस लजिस आरहचय। लालस ॥
पायरटहस न्याय चलिहेम त्राय वछिहस चाव हृचय
मिच गयम रूजस सचय। लालस ॥०
लाल म्योन यलि लाल फिरान विगनि वुछि वुछि
छिवान रुत्रि छुत्र करान ब्रांचय। लालस ॥०
"कल्प" वत्रम कर सचय लाल उछान अन्दरिम वृचय
क्या नेरि करिथ तचय। लालस ॥०

——

जगतकि राज्ये

जगतकि राज्ये जाख देवकी माज्ये धर्मुक ताज गंडिथ द्राख।
छुक च पानम श्री कृष्णमहाराजे चोनय राज्य कुलिआलमस्
जगतस् गाह प्यव दूर गव संकट यलि आख औतार धारिथ चय।
जगतकि राज्ये ॥

मथुराय जायोख गोकुल आयोख बाल लीला करिथ द्रायोख नुन।
अड्काम करिथ बडकाम करनि लोगुक अद कंसस कोडुथ जुव।
जगतकि राज्ये ॥

अज्ञान भारतस् कुरथस् दूर यलि दितथस् गीता उपदेश॥
देश काल बिय हाल कुरुथ धर्म राज्य कायम प्यव भारत नाव।
जगतकि राज्ये॥

त्रोव भय तिमव यिमव जोन धर्मयछु बोड् क्षय कोरुथ पापियन
अदपानय।
करथ् रक्षा तिमन यिमं आय शरण छि मिसाल बड़ द्रौपदी हूंज।
जगतकि राज्ये॥

वन क्या "कनथ्छिम" बूजिमति चाज्ञ संवाद मन छुम चान्यन
पादन निश।
वठ्चलिम् तिलि यलि कासहाम अज्ञानय करतम अनुगृह अच्युतम्य।
जगतकि राज्ये॥

यलि यलि संकट आव दीनन त हीनन तिलि करथक् कृपा दीनानाथ।
व्ययि मा पेयिय् युन जगतस् रछनि च्यह्यू बिय कुस छु रछन वोल।
जगतकि राज्ये॥

वनान जगत च्येय छुक् जगतगुरु श्री गीता छि बोड प्रमान्।
कर्म कर्मुक सुविचारदि "कल्पस" अदगछि पानय बे बाख।
जगतकि राज्ये॥

वक्तस् बुद्ध छय खदमत गार

आश्कव् "गाश" वोछ् बीहीत पिठ् तखतस वक्तस बुद्ध छय
खदमत गार ।
प्रारान प्रारान यारान लागहास प्रारहस तती तत् वक्तस ।
वक्तस ॥
वन् क्या यन दिल तसकुन लोगुम दित्मस वछुन छायन
त ग्रायन ।
पायन प्यमहस छस करान सचय आमचय छमवत्र खस् वस
वक्तस ॥
मत मशरातम रूजिथ थरि बूजिथ सोज सितारन हुन्द ।
पान वन्दय अन्दवन्दय वन्दबन्दय दितमहिस् ।
वक्तस ॥
आश पननि गाश वुछन गाश माशमारिथ व्यूठुमयुस ।
यलि बोजिहेम रोजिहेम सन्निदान पान थवहस पेश कश ।
वक्तस ॥
भक्त बोड कयुथ् छु शोभान दिल छु लूभान वछिथ तस ।
मस चावान लोल अछिव.गुलछावान आव वुछस दस्त बस् ।
वक्तस ॥
यछि छुक भासान पछिछुक टोठान करानछुक् पंज्र शफगत् ।
म्यति होल छुम यथ जिगरस दिगर वातुम तुलम दस ।
वक्तस ॥
हता "कल्प" क्याजि छुक हरान प्रान टाठ्य पानय यस ।
कुस वनि तसुन्द बोड़ बजिर कजर गछान् जानिथ तस् ।
वक्तस ॥

दितम दर्शुन

दितम दर्शुन छुम चोन ह्वस रामनावस् पारि लगह् ।
यम्य नावन तार तारि गामत्य-प्येमत्य आस्य स्यठाह् दूर ।
अहल्या शबरी बिय कात्याह् दयाय सूत्य गय परम धामस ।।
रामनावस ।।

राम राम प्रथयाम करत जीव यिदम्छुय गनीमत ।
पतनो लारान कांसि केह्वासि सुबरित् डलान हिस् ।।
राम नावस ।।

यिम्य खातर कुरुथ व्यवहार वासि सारनो द्राव केह् ।
नेह् त्राविथ करथ वथ पथ छटि घठि लोगुक कर बस् ।।
राम नावस ।।

क्याजि जीव छुक न करान सतुक व्यवहार सार जन्मुक छु
सुय लारुन ।
नत खारुन पापुक बोर वनत लारुन इति क्या छु कस ।।
राम नावस ।।

सोरुन श्री राम नाव करुनगछि धर्मुक त सतुक प्रचार ।
पार सपदान भवसरस नत वरस कासि कुस् तस ।।
राम नावस ।।

समय नो थवान डंजि क्रिजिलि वोन्य गोम जन्मस् ।
दितम हिस रामरस चनुक नतकुस म्योन छुस बेहिस ।।
राम नावस ।।

थकुस सोरि-सोरि त बिय सूच्च सूच्यी म्य तो जानुम न क्या
गव जान ।
दितम जान श्री राम पननी अद "कल्प" तरि भवसरस ।।
राम नावस ।।

लागहय व्यन पोश

लागहाय व्यन पोश मन ठहरावुम मत मन्दछावुम इमि जन्मय।
ध्यान धारण निश अन्दमतथवतम हावतम पननुय सुप्रकाश॥
लागहय॥

कम कम व्यीहय गाम दीह लरि करिफेरिम यारिम कति चिरुस केंह।
मान मान्य कुरुम बुद्धिबोध जाय वाय कुरुम न गोस चिनिश दूर।
लागहय॥

आशा पाशव वोलहस घरि घरि हिन आस च्यरुस कुस छुम्योन।
वनान सारी दीन दयालय चय छुक पानय परमानन्द॥
लागहय॥

कल गन्य रावतम हावतम रुच वथ सत् छम् चानी बोजतम जार।
नार पत ब्रोंठ छुम वार छुमन चलनस् नारस करुम गुलजार॥
लागहय॥

भाव बडरावतम हावतम सत्वथ् पथ कुन मत वुछतम् वञ।
सच करानबेवाय जन्मगोमजाय मायि चान्य निश गोस दूर॥
लागहय॥

वन कया कनन छुम गोमुत रछान छुक शरण आमत्यन।
बति आसय शरण हे भगवानय् कृपा निवानय वञ च्यय्।
लागहय॥

थवुम कनय वनय दास्तान मस्तान म्यानि इत "कल्पस"
मतमन्द छावुम हावुम दर्शुन वर्षुन करहय भाव पोशव॥
लागहय॥

हरि ॐ तत्सत्

निर्भ्रम सपदित ब्रह्म च जानुक्
मानक सोरय ब्रह्म स्वरूप।
सुब्रह्म दपान छु अनादि अविकारी विकास
विकारुक न केहत मांस सत्स्वरूपुय युस
युस ब्रह्म सत चित् बिय आनन्द स्वरूपय
निष्क्रिय नित्य बिय अनन्त अद्वितीय
सु ब्रह्म युस एकरस् पूर्ण सच्चिदानन्द
व्यापक अनादि अन्तरात्मा सर्वाभास
कालातीत गुण कलातीत निर्विकल्प
सत्यानन्द शुद्ध बोध स्वरूप त्रिगुणातीत
अखिल ब्रह्माण्ड चरा चर जगत सोरय
जानुन तसुन्द प्रतीक यत्‌मंज तमिसुन्द भास
भासान भर्गरूप तत् ब्रह्म सत्यसृ अन्दर निबर नमःस्कार

"कल्प"

हरि ॐ तत्सत्

इवान गछान खिवान चवान
हावान वुछुम कम कम रंग।
नतस सग तय न तस प्रंग
रंग वछमस चुपारि रंगा रंग॥

न खिद्यते न विषयै प्रमोदते
न सज्जते नादि चिरंजाते च।
स्तस्मिन् सदा क्रीडति नन्दति स्वयं
निरन्तरानन्द रसेन तृपृः॥

अर्थ

विषयों को प्राप्त होने पर वह न दुःखी होता है, न आनन्दित होता है, वह निरन्तर आत्मानन्द रस से तृप्त होकर स्वयं अपने आप में क्रीडा करता हुआ आनन्दित होता है।

"ॐ रस मस् रोज बोज सोज पननुय मननय करुन
गछि गुरु शव्दय।"

सर्वे भवन्तु सुखिनः
"सत्यं शिवं सुन्दरम्"

Sethi Art Printers, Subhash Nagar, Jammu—5 Ph. : 42628